डॉ. भा. प्र. त्रिपाठी 'वागीश शास्त्री'

रोमा (राम के वंशज) यायावर लोगों की

जिप्सी भाषा

भाषातात्त्विक विवेचन

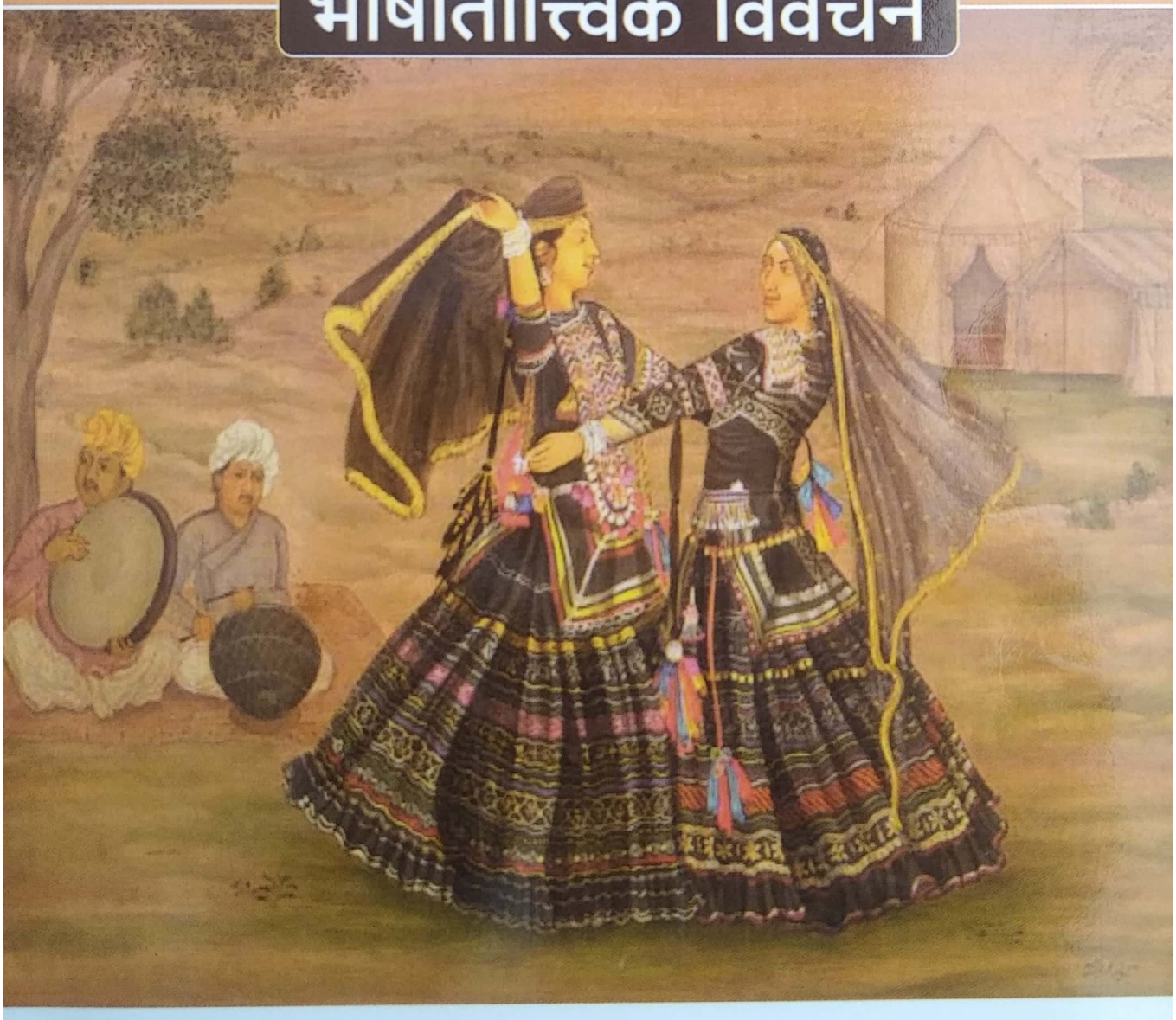

वाग्योगचेतना-पीठम्, वाराणसी

Scanned with OKEN Scanner

वाग्योग-चेतना-ग्रन्थमाला

(चतुर्थ-पुष्पम्)

रोमा (राम का वंशज बताने वाले) यायावरों की

जिप्सी-भाषा

(एक भाषातात्त्विक विवेचन)

: मूलतः भारतीय किन्तु शताब्दियों पूर्व एशिया, आफ्रिका, यूरोप, अमेरिका आदि द्वीपों में विचरण करने वाली यायावर जिप्सी जाति की भाषा :

प्रणेता

महामहोपाध्याय

आचार्य बी.पी.टी. वागीश शास्त्री

पी-एच्.डी., डी.लिट्.

निदेशक तथा प्रोफेसर, अनुसन्धानसंस्थान (पू.),

सम्पूर्णानन्द-संस्कृत-विश्वविद्यालय, वाराणसी।

सम्पादिका

कु.विजया त्रिपाठी

एम्.ए.(फ्रेंच)

वि.सं. २०६९ वा रा ण सी २०१३ ख्रीस्ताब्द

Scanned with OKEN Scanner

प्रकाशक:
सचिव,
वाग्योगचेतनापीठम्,
बी. ३/१३१ए, शिवाला, वाराणसी-२२१००१
दूरभाष: (०५४२) २२७५७०६; चल० ९१३५४६३६७८
e-mail : vagyoga@satyam.net.in
website : www.vagyoga.com.; www.vagyoga.co.in
wikipedia : www.en.wikipedia.org/vagish-shastri &
www. angelfire.com.in/vagyoga

© प्रणेत्रधीन

ISBN : 81-85570-05-1

प्रथम संस्करण : १९८६
द्वितीय संस्करण : २०१३
३०० प्रतियाँ

मूल्य : २००.०० (दो सौ रु. मात्र)

मुद्रक : डी.जी. प्रिंटर्स, खोजवाँ बाजार, वाराणसी.
मो. ९१+९१३५४०८२४७.

Scanned with OKEN Scanner

विषयानुक्रमणिका

विषय	पृष्ठसंख्या
पुरोवाक् पद्मभूषण पण्डित बलदेव उपाध्याय	क-ग
PREFACE—Prof. Dr. Satya Swarup Misra	घ
प्रस्तावना	ङ-छ
उपोद्घात	ज-न
१. प्रथम अध्याय	१–६
जिप्सी जाति और भाषा का उद्गम स्थान	
यूरोपीय जिप्सियों की भाषा का मूल संस्कृत १; जिप्सी जाति के साठ नाम २; विभिन्न देशों में जिप्सियों की स्थिति २; संस्कृत वाङ्मय के विलुप्त शब्दों की प्राप्ति जिप्सी में ४; हिन्दी की निकटतम बहिन जिप्सी भाषा ५; जिप्सी भाषा की शब्दावली ५	
२. द्वितीय अध्याय	७–२०
इतिहास और स्थिति का परिचयात्मक निरूपण	१–१०;
जिप्सीभाषा पर कार्य १०–२०	
३. तृतीय अध्याय	२१–३०
जिप्सी भाषा का तुलनात्मक ध्वनिविवेचन	
स्वर २१-२४; व्यञ्जन २५-३०	
४. चतुर्थ अध्याय	३१–८०
व्याकरणात्मक विवेचन	
प्रातिपदिकों के पूर्व प्रत्यय अथवा उपसर्ग ३१; संज्ञाशब्द ३१; वे संज्ञाशब्द जिनके अन्त में स्वर रहते हैं ३१-३३; वे संज्ञाशब्द जिनके अन्त में व्यञ्जन वर्ण रहते हैं ३३-३४; इकारान्त पुंलिङ्ग शब्दों की कारक-रूपावली ३४; ओकारान्त पुंलिङ्ग शब्दों की कारक-रूपावली ३५; व्यञ्जनान्त शब्दों की कारक-रूपावली ३५; स्त्रीलिङ्ग शब्दों की कारक-रूपावली ३५; कारकों की समान शब्दरूपावली ३६–३८; विभिन्न कारकों के रूप ३९; कर्मकारक (एकवचन) ३९–४०; संबोधन (एकवचन) ४०; कर्ता (बहुवचन) ४१; संबोधन (बहुवचन) ४१–४२; कर्मकारक (बहुवचन) ४२; संबन्धकारक (पुंलिङ्ग एकवचन) ४३; (पुंलिङ्ग बहुवचन) ४३; स्त्रीलिङ्ग एकवचन ४३; स्त्रीलिङ्ग बहुवचन ४३–४४; संबन्ध कारक ४४;	

Scanned with OKEN Scanner

अधिकरण कारक ४४; अन्य कारक विचार ४४—४५; संप्रदान कारक ४५-४६; करण कारक ४६—४७; अपादान कारक ४७; ह्रस्वार्थक तद्धित प्रत्यय—'ओरो' ४७–४८; विशेषण ४८; अतिशयार्थ-बोधक प्रत्यय–'पो' ४९; अतिशयार्थबोधक प्रत्यय–देर ४९; क्रियाविशेषण ५०; सर्वनाम ५१; संवन्धवाचक सर्वनाम (उत्तम पुरुष, मध्यम पुरुष, अन्य पुरुष) ५२–५३; सर्वनामों का वाक्यप्रयोग ५३–५४; संबन्धवाचक सर्वनाम ५४–५५; प्रश्नवाचक सर्वनाम शब्द-रूपावली ५५–५७; जिप्सी भाषा की क्रियाएँ ५७–७३; कालविवेचन ७३–७८; कृदन्त ७८–८० ।

परिशिष्ट

१. तुर्की राज्य की जिप्सी-शब्दावली ८१—११६
२. जिप्सी-वाक्यावली ११७—१२७
३. संस्कृत-तद्भव जिप्सी-शब्दसूची १२८—१२९
४. कुछ जिप्सी और बुन्देली शब्दों की तुलनात्मक शब्दसूची १३०—१३१
५. कुछ जिप्सी और हिन्दी शब्दों की तुलनात्मक शब्दसूची १३२
६. प्रयुक्त व्यक्ति-नामसूची १३३
७. प्रयुक्त स्थान-नामसूची १३४
८. प्रयुक्त भाषा-नामसूची १३५
९. प्रयुक्त विशिष्ट शब्दसूची १३६—१३७
१०. प्रयुक्त ग्रन्थ-नामसूची १३८
११. सहायक ग्रन्थसूची १३९
१२. सहायक 'इँग्लिश्-जर्मन्-इटालियन्'-ग्रन्थसूची १४०—१४२
१३. ग्रन्थप्रणेता का संक्षिप्त परिचय १४३
१४. प्रणेता की मौलिक कृतियाँ १४४—१४७

★

Scanned with OKEN Scanner

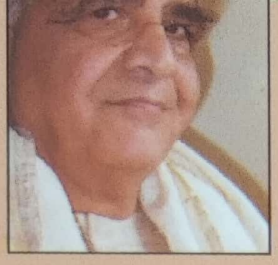

म.म. डॉ. वागीश शास्त्री

यायावर जातियों का भारत से पूर्व पश्चिम और दक्षिण दिशाओं में निष्क्रमण का पुरातनतम इतिहास मिलता है। यथासमय संस्कार न होने के कारण संस्कारविहीन व्रात्यों को समाज बहिष्कृत कर दिया जाता था। ये व्रात्य अफगानिस्तान (जो कभी भारत का अंग था) होते हुए ईरान आदि पश्चिमी देशों में चले जाते थे। भारत की प्रसिद्धि पहले नवद्वीप के रूप में थी। भारत कुमारिका द्वीप कहाता था। पूर्व दिशा में आठ द्वीप थे जो आज इंडोनेशिया, थाईलैंड, सुमात्रा, कम्बोडिया आदि नये नामों से जाने जाते हैं। कम्बोडिया के विष्णुमन्दिर जगजाहिर हैं। वहाँ छठी शताब्दी के संस्कृत-शिलालेख उपलब्ध होते हैं। इंडोनेशिया में यद्यपि धर्म इस्लाम है तथापि वहाँ की जनभाषा संस्कृत-पालिनिष्ठ है। वहाँ की एयरलाइन्स का नाम है 'गरुड' जबकि भारतीय एयरलाइन्स् का नाम है - इंडियन एयरलाइन्स्।

ज्ञात का आँचल थाम कर अज्ञात की गहराई तक पहुँचा जा सकता है। भारत की ज्ञात यायावर जाति को विश्वजनीन जन जिप्सी के नाम से जानते हैं। वह इस समय भी टर्की, यूगोस्लाविया, यूनान, इटली, स्पेन, जर्मनी और रूस इत्यादि देशों में भ्रमण कर रही है। अभी कुछ वर्ष पूर्व इनका सम्मेलन चंडीगढ़ में हुआ था। वे भारत में अपने पूर्वजों का ग्राम मारीशस के लोगों की तरह ढूँढ़ा करते हैं। ईसवी शताब्दी पूर्व भारत के 'राम' नामक प्रदेश से इनका समय-समय पर निष्क्रमण हेाता रहा। विष्णुपुराण में निर्दिष्ट इस प्रदेश में राजस्थान, पंजाब और सिन्ध प्रदेशों की सीमाएँ जुड़ी थीं। अफगानिस्तान का भी कुछ अंश समाविष्ट था। जिस समय वे यहाँ से गये उनकी भाषा संस्कृतनिष्ठ थी। इस समय वह बदलते-बदलते हिन्दी के समान हो गयी है। पंडित जवाहरलाल नेहरू जब यूगोस्लाविया गये थे तब वहाँ के जिप्सियों ने उनसे जिप्सी में बात की थी जो हिन्दी के समान थी।

जिप्सी ईरान से ईजिप्ट (मिस्र) होते हुए बोहेमिया पहुँचे तब वहाँ की जनता ने उन्हें ईजिप्ट से आया हुआ जान ईजिप्सियन् > जिप्सियन > जिप्सी नाम से संबोधित किया। भिन्न-भिन्न देशों ने उन्हें भिन्न-भिन्न नाम दिये। किन्तु वे स्वयं को रोमा (< राम) और स्त्रियों को रोम्नी कहते हैं। जिप्सियों के पहले अन्धकारयुगीन भारत से चार निष्क्रमण हुए थे। इस कारण पश्चिमी जगत् की भाषाओं में संस्कृत के तद्भव शब्द उपलब्ध होते हैं।

प्रस्तुत पुस्तक में जिप्सियों के इतिहास के साथ-साथ उनकी भाषा का सम्यक् विवेचन हुआ है। इस विषय की यह प्रथम पुस्तक है जिसमें जिप्सी भाषा का व्याकरणात्मक और तुलनात्मक ध्वनि-विवेचन हुआ है। साथ ही इसमें जिप्सी शब्दावली और जिप्सी वाक्यावली का व्युत्पत्तिपूर्वक समावेश किया गया है। व्याकरण और भाषाशास्त्र के उद्भट विद्वान् डॉ. वागीश शास्त्री ने अनेक वर्षों के अनुशीलन द्वारा इस पुस्तक की रचना कर हिन्दी के भंडार को समृद्ध बनाया है।

ISBN 818557005-1

9 788185 570051

Price : ₹ 200

Scanned with OKEN Scanner